



प्राचीन शिक्षा और ज्ञान के प्रमुख केंद्र

¹KM Roli Singh and ²Dr. Alka Mishra

¹Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

²Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20159054>

Corresponding Author: KM Roli Singh

सारांश

प्राचीन काल से ही शिक्षा मानव सभ्यता का अंग रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भारत की शिक्षा प्रणाली में बहुत बड़े परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा में नैतिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों के साथ-साथ कौशल और गुण भी सिखाए जाने चाहिए। शिक्षा को केवल आजीविका कमाने के साधन ही नहीं सिखाना चाहिए बल्कि व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण भी करना चाहिए। वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल साक्षरता दर को बढ़ा रही है लेकिन शिक्षित लोगों का विकास करने में असमर्थ है। यह शोधपत्र प्राचीन काल, मध्यकालीन युग और आज के आधुनिक युग की शिक्षा प्रणाली में अंतर का अध्ययन करता है। यह शोधपत्र वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अपनाए जा सकने वाले परिवर्तनों पर भी विचार करता है ताकि इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

मूल शब्द: प्राचीन शिक्षा, ज्ञान, केंद्र, भारत, शिक्षा प्रणाली।

1. प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी की शुरुआत में स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मिशन और थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इंडिया ने पश्चिमी दुनिया को भी ज्ञान की प्राचीन स्वर्ण खदान के आकर्षण और शालीनता से परिचित कराने की कोशिश की, जिसने न केवल भारतीयों, बल्कि विदेशियों को भी प्रेरित किया। विभिन्न देशों के बुद्धिजीवियों ने इसे अपनी भाषाओं में अनुवादित किया और तर्कसंगत दिमाग के लिए इसकी पुनर्व्याख्या की। जैसे-जैसे भारत प्राचीन से मध्यकालीन की ओर बढ़ा, इसकी शिक्षा प्रणाली खराब होती गई। दुनिया की इतनी कुशल और सबसे प्राचीन शिक्षा प्रणाली के पतन के लिए कई कारक जिम्मेदार थे। मध्यकालीन युग में क्षय और आक्रमणों के कारण निरंतर मंथन के साथ, ज्ञान के विकास के लिए एक स्थान के रूप में विश्वविद्यालय का विचार भुला दिया गया।

इसलिए अंग्रेज़ आसानी से अपने बिचौलियों, क्लर्कों और कानून का पालन करने वाले नागरिकों को बनाने के लिए नए मानदंड स्थापित कर सकते थे। रेल रिपोर्ट तब बनाई गई थी जब वायसराय कर्जन को लगा कि भारतीय विश्वविद्यालय दुष्प्रचार और कट्टरपंथी सोच के केंद्र बन रहे हैं। इसलिए इस रिपोर्ट का उद्देश्य उभरते भारत की "बौद्धिक अभिव्यक्ति" को दबाना था। नतीजतन, विश्वविद्यालय नौकरशाहों, मंत्रालय की निगरानी, विनियमित वित्त

और विचारों की बेड़ियों में जकड़े हुए थे। स्वतंत्रता के बाद, संरचना बदलने में विफल रही है। सरकार अपने यूजीसी शाखा के साथ विश्वविद्यालयों और उभरती राजनीतिक बहसों को नियंत्रित करती है। राजनेता अपने राजनीतिक रोस्टर को भरने के लिए खराब गुणवत्ता वाले छात्र चाहते हैं और कैम्पस की राजनीति के राजनीतिकरण का स्तर उसी का सबूत है।

प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जो समाज और बौद्धिक विचारों की उभरती जरूरतों को दर्शाता है। गुरुकुल के नाम से जाने जाने वाले अनौपचारिक, व्यक्तिगत शिक्षण वातावरण में अपनी शुरुआती जड़ों से लेकर नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की स्थापना तक, प्राचीन भारतीय शिक्षा सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। गुरुकुल, जो अक्सर शांत, ग्रामीण स्थानों पर स्थापित होते थे, उच्च शिक्षा के पहले संस्थान थे जहाँ छात्रों को शास्त्रों और दर्शन से लेकर गणित और खगोल विज्ञान तक कई विषयों में व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। समय के साथ, जैसे-जैसे भारत का समाज अधिक जटिल और शहरीकृत होता गया, अधिक औपचारिक और संरचित शैक्षिक प्रणालियों की आवश्यकता उभरी, जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई जो उत्कृष्टता के केंद्र बन गए, जिन्होंने दुनिया भर के विद्वानों को आकर्षित किया।

शिक्षा में यह विकास न केवल उस समय की बौद्धिक उन्नति को दर्शाता है, बल्कि प्राचीन भारत के व्यापक सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर भी प्रकाश डालता है। इस अवधि के दौरान उभरे शैक्षिक दर्शन, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के साधन के रूप में आलोचनात्मक सोच, जांच और ज्ञान पर जोर देते हुए, आधुनिक शैक्षिक प्रणालियों को प्रभावित करना जारी रखते हैं। यह शोधपत्र प्राचीन भारत में शिक्षा की यात्रा की पड़ताल करता है, इसकी संरचनाओं, दर्शन और सभ्यता की बौद्धिक विरासत को आकार देने वाली प्रमुख संस्थाओं की जांच करता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत की शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आया है। प्राचीन भारत में, गुरुकुल, बौद्ध मठों और नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी। ये प्रणालियाँ व्यक्ति के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती थीं, जिसमें उनका आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक विकास शामिल था। आज, शिक्षा प्रणाली अधिक संरचित है, जिसमें अकादमिक उपलब्धियों, कौशल और मानकीकृत परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस शोध का उद्देश्य इन दो अलग-अलग शिक्षा प्रणालियों की तुलना करना है ताकि उनके प्रमुख विचारों, शिक्षण विधियों और परिणामों को समझा जा सके। अध्ययन यह भी पता लगाएगा कि भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए प्राचीन शैक्षिक प्रथाओं का उपयोग कैसे किया जा सकता है, खासकर छात्रों में समग्र विकास, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में।

2. साहित्य समीक्षा

लेयेक, परीक्षित और अन्य। (2021) [1]। शिक्षा सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाने या ज्ञान, कौशल, मूल्य, नैतिकता, विश्वास और आदतों को प्राप्त करने की प्रक्रिया है। शैक्षिक विधियों में शिक्षण, प्रशिक्षण, कहानी सुनाना, चर्चा और निर्देशित अनुसंधान शामिल हैं। प्राचीन भारत में, शिक्षा प्रणाली के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरीके मौजूद थे। स्वदेशी शिक्षा घर, मंदिरों, पाठशालाओं, टोलों, चतुष्पदियों और गुरुकुलों में दी जाती थी। घरों, गांवों और मंदिरों में ऐसे लोग होते थे जो छोटे बच्चों को जीवन के पवित्र तरीके अपनाने में मार्गदर्शन करते थे। गुरुकुल या गुरुकुलम प्राचीन भारत में एक प्रकार की शिक्षा प्रणाली है जिसमें शिष्य (छात्र या शिष्य) गुरु के पास या उनके साथ एक ही घर में रहते थे। शिक्षा के अंत में, शिष्य गुरुकुल छोड़ने से पहले गुरुदक्षिणा देता है। समय के साथ शिक्षा की दो प्रणालियाँ विकसित हुईं, वैदिक और बौद्ध। जैसा कि नाम से पता चलता है, पहली प्रणाली में वेद, वेदांत, उपनिषद और अन्य संबद्ध विषय पढ़ाए जाते थे, जबकि दूसरी प्रणाली में बौद्ध धर्म के सभी प्रमुख स्कूलों के विचार पढ़ाए जाते थे। विद्यापीठ आध्यात्मिक शिक्षा का स्थान था, जिसकी स्थापना महान आचार्य श्री शंकर ने श्रृंगेरी, कांची, द्वारका और पुरी आदि स्थानों पर की थी। अग्रहार गांवों में ब्राह्मणों की एक संस्था थी, जहां वे पढ़ाते थे। आधुनिक शिक्षा पारंपरिक शिक्षा से बहुत अलग है। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानंद सरस्वती ने 10 अप्रैल 1875 को की थी। पारंपरिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा, दोनों को समान महत्व दिया जाना चाहिए। 'भारत की प्राचीन और वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा' शीर्षक वाले इस अध्याय में प्राचीन और वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की शैक्षिक संरचना, पाठ्यक्रम, पद्धति और छात्रों और शिक्षक के बीच बातचीत का खुलासा किया गया है; और उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए परीक्षा आयोजित करने और प्रमाण पत्र / डिग्री प्रदान करने वाली सर्वोच्च संस्था कौन सी है। इस शैक्षिक

स्तर के लिए शीर्ष संस्था की भूमिका, संस्थान की स्थिति, वित्तीय सहायता आदि। अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन पर विस्तार से चर्चा की गई है।

शिवम, प्रियांक आदि। (2022) [2]। भारत की प्राचीन एवं वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा। इस अध्याय में 'भारत की प्राचीन एवं वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा' शीर्षक से प्राचीन एवं वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की शैक्षिक संरचना का खुलासा किया गया है। पाठ्यक्रम, पद्धति एवं छात्र एवं शिक्षक के बीच बातचीत; तथा उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए परीक्षा आयोजित करने एवं प्रमाण-पत्र/डिग्री प्रदान करने वाली सर्वोच्च संस्था कौन सी है। इस शैक्षिक स्तर के लिए सर्वोच्च संस्था की भूमिका, संस्थान की स्थिति, वित्तीय सहायता आदि। अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन पर विस्तार से चर्चा की गई है।

यादव, उर्मिला। (2018) [3]। शिक्षा का मतलब सिर्फ किसी खास संकाय या विषय में ज्ञान देना या किसी को नौकरी पाने या परीक्षा में अच्छे नंबर लाने के योग्य बनाना नहीं है, बल्कि साथ ही यह तार्किक सोच का प्रशिक्षण भी है जो आने वाली पीढ़ियों को हमेशा बदलते परिवेश में समायोजित करने में मदद करता है। इसका मतलब मन के दरवाजे खोलना, आत्मा को शुद्ध करना और आत्म-साक्षात्कार करना भी है। शिक्षा की गुणवत्ता सामाजिक लाभ के लिए जनशक्ति की गुणवत्ता को बहुत प्रभावित करती है। यह शोधपत्र प्राचीन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के बीच तुलना प्रस्तुत करता है। यह प्राचीन शिक्षा की मूल संरचना पर प्रकाश डालता है जिसने समाज को नैतिक, सामाजिक और नागरिक मूल्यों को आत्मसात करने वाली गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति का योगदान दिया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई कारणों से कमजोर है जिसके परिणामस्वरूप परिणाम आत्म-केंद्रित होते जा रहे हैं। इसके लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कई सुधारों की आवश्यकता है जिन्हें छात्रों के समग्र विकास के लिए प्राचीन शिक्षा से लागू किया जा सकता है।

गोपालकृष्ण, ध्रुवराज और अन्य। (2022) [4]। प्राचीन भारतीय शिक्षा की शुरुआत तक्षशिला में दुनिया के पहले विश्वविद्यालय से हुई थी। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 7वीं शताब्दी ईस्वी तक तक्षशिला विश्वविद्यालय कई हमलों का शिकार हुआ और अपने अस्तित्व का महत्व खोने लगा। शिक्षकों और विद्वानों को एहसास हुआ कि उनकी शिक्षा लंबे समय तक नहीं चलेगी। तब उन्होंने शिक्षा को बरकरार रखने के लिए दुनिया के दूसरे हिस्सों में जाने का फैसला किया। मौर्य वंश के राजा चंद्रगुप्त मौर्य के समय नालंदा की शुरुआत के साथ शिक्षण की परंपरा जारी रही। इस लेख में शुरुआत, प्रवेश, शिक्षण-अधिगम विधियों, इसके स्थायित्व और गिरावट के प्रमुख कारकों के बारे में एक प्रयास किया गया है।

कालोखे, अनिल एट अल। (2025) [5]। भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो प्राचीन काल के समग्र गुरुकुल मॉडल से विकसित होकर आज के संरचित, प्रौद्योगिकी-संचालित ढांचे में बदल गई है। नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन संस्थानों ने व्यक्तिगत मार्गदर्शन, व्यावहारिक कौशल, नैतिक मूल्यों और सामाजिक कल्याण पर जोर दिया। औपनिवेशिक प्रभाव ने मानकीकृत पाठ्यक्रम, औपचारिक परीक्षाएँ और संस्थागत संरचनाएँ पेश कीं, जिसने आधुनिक शिक्षा को आकार दिया। यह शोधपत्र भारतीय शिक्षण पद्धति, पहुँच और विषय-वस्तु के विकास की जाँच करता है, जिसमें अनुभववात्मक और नैतिक शिक्षा के शाश्वत मूल्य पर जोर दिया गया है। प्राचीन सिद्धांतों को आधुनिक तरीकों के साथ मिलाकर, भारत भावी पीढ़ियों के लिए एक संतुलित और समावेशी शिक्षा मॉडल विकसित कर सकता है।

3. प्राचीन भारत में जीवन दर्शन

भारत के प्राचीन जीवन दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ संसार में भौतिक अस्तित्व को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता, वहीं इस भौतिक संसार में कर्म के महत्व को अनदेखा नहीं किया जाता। भारतीय जीवन पद्धति और शिक्षा में कर्म के सिद्धांत का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। कर्म या कर्म का उद्देश्य मानव जाति का उद्धार नहीं होना चाहिए। यह कर्म के सिद्धांत और प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति का आदर्श रहा है। इसलिए, व्यक्ति के लिए भक्ति का अंतिम लक्ष्य ब्रह्म है, न कि यह संसार। भौतिक संसार मानव आत्मा की प्रयोगशाला है जहाँ व्यक्ति को आत्म-विकास के लिए व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त करनी होती है। भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति आत्म-विकास के लिए शिक्षा के नैतिक आधार के रूप में सादा जीवन और उच्च विचार पर सबसे अधिक जोर देती है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक रूप से कहा गया है।

इस प्रकार विद्या या ज्ञान के सभी क्षेत्रों को दो व्यापक धाराओं में विभाजित किया गया- पराविद्या (उच्च ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान) और 2 अपराविद्या (निम्न ज्ञान, धर्मनिरपेक्ष विज्ञान)। यहाँ आरामदायक जीवन जीने के लिए बाद की आवश्यकता होती है। पूर्व व्यक्ति को परलोक के लिए पूरी तरह से तैयार होने में मदद करता है। इसलिए दोनों के संतुलित संयोजन की वकालत की जाती है ताकि सभ्यता और संस्कृति दोनों प्रदान की जा सकें।

भौतिकवादी शिक्षा में भौतिक विज्ञान के ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है। विद्यार्थी के लिए ही विकसित सामाजिक संरचना विद्यमान है। भौतिक ज्ञान की खोज में लगे विद्यार्थी को सामाजिक संरचना की धुरी माना गया है, क्योंकि उसके विकास में ही समाज का कल्याण निहित है। आध्यात्मिक ज्ञान को परम सुख प्राप्ति का साधन माना गया है। महान सत्य की प्राप्ति के लिए एकांत में गहन ध्यान आवश्यक है और इसीलिए व्यक्ति को एक बार फिर कठोर तप का सहारा लेने का आदेश दिया गया है। आध्यात्मिक ज्ञान के साधक को भौतिक वस्तुओं से दूर रहने और आत्म-ध्यान में पूरी तरह से लीन रहने का आदेश दिया गया है, क्योंकि दिव्य या आध्यात्मिक ज्ञान के मुख्य तत्वों को सुनने या बुद्धि के माध्यम से नहीं समझा और महसूस किया जा सकता है। इन्हें केवल ईश्वरीय कृपा से ही महसूस किया जा सकता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के पूर्ण शारीरिक विकास के साथ-साथ मोक्ष और परम सुख की प्राप्ति की इच्छा से व्याप्त है, ठीक उसी तरह जैसे जीवन दर्शन धर्म की भावना से प्रेरित है। भारतीय शिक्षा प्रणाली शारीरिक और आध्यात्मिक एकांत दोनों को पूरा करती है।

4. प्राचीन भारतीय शिक्षा के मूल सिद्धांत

प्राचीन भारतीय शिक्षा भारतीय ज्ञानमीमांसा और दार्शनिक परंपराओं की नींव पर ही विकसित हुई थी। जीवन और संसार की क्षणभंगुरता, अंतिम मृत्यु की अवधारणा और सांसारिक सुखों की निरर्थकता के विचार ने उन्हें एक विशेष दृष्टिकोण प्रदान किया था। संपूर्ण शैक्षिक परंपरा इन 3 सिद्धांतों पर आधारित थी। इस प्रकार, भारतीय ऋषियों ने खुद को एक अति-संवेदनशील दुनिया और आध्यात्मिक शक्तियों के अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया और अपने जीवन को उसी के अनुसार ढाला। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य चित्ति-वृत्ति-निरोध (तथाकथित ठोस दुनिया से जुड़ी मानसिक गतिविधियों का नियंत्रण) के रूप में उभरा। हालाँकि, शिक्षा ने छात्र

की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसकी शक्तियों के विकास की उपेक्षा नहीं की।

■ चार वेद

विश्व के साहित्यों में सबसे प्राचीन माने जाने वाले वेद प्राचीन भारत के जीवन दर्शन के मूल स्रोत हैं। इन वेदों के अध्ययन से व्यक्ति को न केवल जीवन दर्शन बल्कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के संपूर्ण स्वरूप का गहन ज्ञान प्राप्त होता है। फलस्वरूप भारत का संपूर्ण साहित्य और दर्शन, उपनिषद, स्मृति और पुराण सभी वेदों की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हैं। भारतीय जीवन में वेदों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति का आधार वेदों में निहित है, जिनकी संख्या चार है- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदों की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। इनके माध्यम से हम प्राचीन भारत के लोगों की संस्कृति, सभ्यता, जीवन और दर्शन के बारे में जान पाते हैं। वेद मानव जीवन के मुख्य उद्देश्य का प्रतीक हैं, जो जन्म और मृत्यु के इस संसार से मुक्ति रहा है। भारतीय जीवन दर्शन ने जीवन को कभी भी उद्देश्यहीन नहीं माना है।

5. उत्तर वैदिक युग में शिक्षा

वैदिक काल में, शिक्षा के क्षेत्र में पुरोहित वर्ग का अत्यधिक प्रभुत्व था, इसलिए यज्ञ अनुष्ठानों से संबंधित ज्ञान काफी उन्नत था। ऐसे विद्वान और विचारक थे जिन्होंने जीवन के प्रति रहस्यवाद की विशेषता वाला दृष्टिकोण विकसित किया था और ईश्वर, आत्मा और ब्रह्मांड, जीवन और मृत्यु आदि जैसे चिंतनशील विषयों पर ध्यान लगाया था। उत्तर-वैदिक युग में, चिंतनशील विचारों की यह प्रवृत्ति तीव्र और प्रबल हो गई। दार्शनिकों ने अब आत्म-साक्षात्कार पर ध्यान लगाया। उनके रहस्यमय अनुभव ब्राह्मण और आरण्यक नामक शास्त्रों के माध्यम से प्रकट हुए। उपनिषद इसके बाद अस्तित्व में आए। उपनिषदों का कहना है कि जो भी अच्छा काम पूर्ण ज्ञान और जागरूकता के साथ किया जाता है, वह जीवन में सशक्त और फलदायी होता है। वे प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को संरक्षित करने वाले अभिलेखागार हैं। वेदांत, दार्शनिक विचारों में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जिसे सही मायने में वैदिक ज्ञान का चरम बिंदु माना जा सकता है, जो उपनिषदों के पत्रों के माध्यम से प्रकट हुआ था। उत्तर-वैदिक शिक्षा का प्रसार और प्रसार विविध संस्थाओं के माध्यम से हुआ, जिन्हें शाखा, चरण, परिषद, कुल और गोत्र के नाम से जाना जाता था - जो वैदिक साहित्य की मौखिक परंपरा में सुधार था।

6. सूत्रों और महाकाव्यों में शिक्षा

■ सूत्रों में शिक्षा

वैदिक साहित्य के बाद सूत्र साहित्य का काल आया। यह 600 ईसा पूर्व से 200 ईसा पूर्व के बीच आता है। वैदिक साहित्य का विकास इतना व्यापक और फैला हुआ था कि कुछ व्यावहारिक पद्धति विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई जो कि वैदिक साहित्य के विशाल भंडार को सुविधाजनक रूप से प्रस्तुत कर सके। इस आवश्यकता ने एक नए प्रकार के साहित्य, सूत्रों को जन्म दिया। इन सूत्रों ने बहुत ही संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप में महान सिद्धांतों और सत्यों को प्रकट किया। इस युग में, शिक्षा के नियम और विनियम मुख्य रूप से धर्म-सूत्रों के रूप में प्रकट हुए। इन धर्म-सूत्रों में सामाजिक आचरण के सिद्धांत और शिक्षकों और छात्रों के लिए कर्तव्यों की संहिता शामिल थी।

संपूर्ण सूत्र साहित्य में मुख्य रूप से छह विभाग हैं जिन्हें वेदांग कहा जाता है। वेदों को समझने के लिए शिक्षा, छंद, व्याकरण,

कल्प और ज्योतिष जैसे विभिन्न विषयों का पूर्व ज्ञान होना अनिवार्य था। इस काल की शिक्षा की एक विशेष विशेषता यह है कि छात्रों को सीखने की विभिन्न शाखाओं में विशेषज्ञता प्राप्त होती थी। यह काल प्राचीन भारतीय शिक्षा में अपने रचनात्मक और सृजनात्मक पहलू के दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि ज्यामिति, बीजगणित, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, शरीर विज्ञान और व्याकरण जैसी महत्वपूर्ण शिक्षा शाखाएँ इस काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँचीं।

महाकाव्यों में शिक्षा

रामायण और महाभारत प्राचीन भारत के प्रमुख महाकाव्य हैं। ये महाकाव्य हमें उस युग के सैन्यवाद के सिद्धांत की झलक देते हैं; फिर भी, उनमें बिखरे हुए तथ्य हैं, जो उस काल की शिक्षा पर प्रकाश डालते हैं।

महाभारत में ऐसे कई आश्रमों का वर्णन है जहाँ दूर-दूर से छात्र कुछ प्रसिद्ध शिक्षकों से शिक्षा लेने के लिए एकत्रित होते थे। एक पूर्ण आश्रम में कई विभाग होते हैं, जिनकी गणना इस प्रकार की गई है:

- अग्निस्थान, अग्नि-पूजा और प्रार्थना का स्थान
- ब्रह्म-स्थान, वेद विभाग
- विष्णुस्थान, राज-नीति, अर्थनीति और वार्ता सिखाने का विभाग
- महेंद्रस्थान, सैन्य अनुभाग
- विवस्वत-स्थान, खगोल विज्ञान विभाग
- सोमस्थान, वनस्पति विज्ञान विभाग
- गरुड़ स्थान, परिवहन और परिवहन से संबंधित अनुभाग
- कार्तिकेय-स्थान, सैन्य संगठन, गश्ती दल, बटालियन और सेना का गठन कैसे किया जाए, इसकी शिक्षा देने वाला अनुभाग।

इनमें सबसे महत्वपूर्ण आश्रम नैमिषा का था, जो एक जंगल था, जो एक विश्वविद्यालय जैसा था। इस स्थान के प्रमुख व्यक्ति शौनक थे, जिन्हें कुलपति की उपाधि दी जाती थी, जिसे कभी-कभी 10,000 शिष्यों के गुरु के रूप में परिभाषित किया जाता था।

7. ब्राह्मण शिक्षा

वैदिक शिक्षा के काल में मानव अस्तित्व के अधिकांश पहलुओं को विकास और विकास की पूरी गुंजाइश मिली। मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं के सामंजस्यपूर्ण विकास के संबंध में ब्राह्मणवादी शिक्षा का अपना विशिष्ट महत्व है। इसने मानव के चरित्र और व्यक्तित्व के विकास में बहुत मदद की। श्री एफ.ई. केय ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन एवं परवर्ती भारतीय शिक्षा का इतिहास' में लिखा है कि,

"ब्राह्मण शिक्षा ने न केवल एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जो ढहते साम्राज्यों और समाज के परिवर्तनों के बावजूद बची रही, बल्कि उन्होंने इन हजारों वर्षों में उच्च शिक्षा की मशाल को प्रज्वलित रखा और उनमें कई महान विचारक हुए जिन्होंने न केवल भारत की शिक्षा पर, बल्कि विश्व के बौद्धिक जीवन पर भी अपनी छाप छोड़ी।"

इस प्रकार, ब्राह्मण शिक्षा का उद्देश्य वैदिक शिक्षा के उद्देश्य के समान था, जब शिक्षा को ज्ञान प्राप्ति का साधन माना जाता था। वैदिक शिक्षा में भी शिक्षा के धार्मिक पहलू पर बहुत अधिक जोर दिया गया था, लेकिन ब्राह्मण शिक्षा में सांसारिक पहलू भी शामिल

था। शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास के साथ-साथ आत्मनिर्भरता, आत्म-नियंत्रण, चरित्र निर्माण, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक और नागरिक जीवन का ज्ञान और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण था।

ब्राह्मण शिक्षा की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार थीं

- शिष्य सीधे आचार्य के संपर्क में रहता था। गुरु भी अपने शिष्यों के भोजन, आवास आदि की सारी जिम्मेदारी उठाता था।
- विद्यार्थियों की दैनिक दिनचर्या नियमित थी।
- ब्राह्मणवादी शिक्षा में विद्यार्थियों के चरित्र और स्वभाव के निर्माण पर काफी ध्यान दिया जाता था।
- विद्यार्थियों को कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था।
- इसने विद्यार्थियों को सम्पूर्ण जीवन के लिए तैयार किया। फिर भी विशेषज्ञता की ओर रुझान बढ़ा।
- ब्राह्मणवादी शिक्षा में सामूहिक शिक्षण के स्थान पर व्यक्तिगत शिक्षण का प्रचलन था। इस प्रकार विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभा को विकसित करने के अधिक अवसर मिलते थे।
- ब्राह्मणवादी शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं थी; यह जीवन के संघर्षों का सामना करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान भी देती थी।
- ब्राह्मणकालीन शिक्षा में अध्ययन का पाठ्यक्रम वैदिक काल की तुलना में बहुत अधिक विस्तृत था। चारों वेदों के अलावा इतिहास-पुराण, व्याकरण, अंकगणित, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, यजुर्वेद आदि का भी अध्ययन किया जाता था।
- शिक्षा मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित थी। शारीरिक दंड को पाप माना जाता था।
- छात्र अपनी पसंद और क्षमता के अनुसार अध्ययन करने के लिए स्वतंत्र थे।
- ब्राह्मणवादी शिक्षा में कर्म सिद्धांत और जाति व्यवस्था के स्तरीकरण का भी अध्ययन के पाठ्यक्रमों पर प्रभाव पड़ा।

वैदिक काल में अपनाई गई शिक्षण और सीखने की मौखिक प्रणाली ब्राह्मण युग में भी जारी रही। उन्हें स्वाध्याय का अभ्यास कराया गया। शिक्षा चर्चाओं और वाद-विवादों के माध्यम से दी गई और सम्मेलनों और सभाओं का भी आयोजन किया गया। शिक्षा की एक नई प्रणाली 24 जिसके द्वारा उदाहरणों और दृष्टांतों के माध्यम से महान और अमूर्त नैतिक सत्यों को सरल और समझने योग्य बनाया गया। वैदिक काल की तरह, ब्राह्मण युग में भी लेखन कला का अच्छा विकास नहीं हुआ था और इसलिए शिक्षा ज्यादातर मौखिक थी।

8. निष्कर्ष

बौद्ध शिक्षा के धार्मिक और दार्शनिक पहलुओं के साथ-साथ धर्मनिरपेक्ष शिक्षा भी इसका एक अनिवार्य हिस्सा थी। इस प्रणाली ने नालंदा, तक्षशिला और विक्रम शिला जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को जन्म दिया, जो धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों तरह की शिक्षा के केंद्र थे। शिक्षा जीवन की विभिन्न समस्याओं से निकटता से जुड़ी हुई थी और इसका उद्देश्य उनके ठोस समाधान खोजना था। इस प्रकार, नैतिकता और अनुशासन के क्षेत्र में बौद्ध शिक्षा प्रणाली ने मानव जीवन को काफी समृद्ध किया। यह काफी हद तक बौद्ध शिक्षा की दीर्घकालिक पारंपरिक पृष्ठभूमि के कारण ही है कि हम अभी भी एशिया के सुदूर पूर्वी देशों के साथ अपने सामंजस्यपूर्ण, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को जारी रखने में सक्षम हैं।

9. संदर्भ

1. लायेक प, सिल क. प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन: भारत के संदर्भ में. International Journal of Advanced Research. 2021;9:427-434. DOI: 10.21474/IJAR01/127041
2. शिवम प, देबबर्मा द. भारत की प्राचीन और वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली का लेआउट; 2022।
3. यादव उ. प्राचीन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षा, स्थिरता और समाज. 2018;01-03. DOI: 10.26480/ess.01.2018.01.03।
4. गोपालकृष्ण ध, कमलापुर जी. Omniscience: A Multidisciplinary Journal. 2022;11:33।
5. कालोखे अ, संभाजीराव क. भारत में पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के विकास और एकीकरण का तुलनात्मक विश्लेषण. International Journal of Advanced Research in Science Communication and Technology. 2025;5:46-52. DOI: 10.48175/IJARSCT-26207।
6. मिश्रा न, ऐथल श. प्राचीन भारतीय शिक्षा: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता और महत्व. International Journal of Case Studies in Business, IT, and Education; 2023, 238-249. DOI: 10.47992/IJCSBE.2581.6942.0271।
7. मिश्रा न, ऐथल श. प्राचीन भारतीय शिक्षा: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता और महत्व. International Journal of Case Studies in Business, IT, and Education; 2023, 238-249. DOI: 10.47992/IJCSBE.2581.6942.0271।
8. कालोखे अ. भारतीय शिक्षा प्रणाली का व्यापक विकास और प्रभाव: प्राचीन ज्ञान से आधुनिक नवाचार तक. Journal of Nonlinear Analysis and Optimization. 2025;16:144-151. DOI: 10.36893/JNAO.2025.V16I1.020।
9. सीवी स, अशोक ह. भारत में शिक्षा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. 2021;10:47-64।
10. कुमार अ. कोविड-19 महामारी के बीच विज्ञान शिक्षा में सुधार के लिए सुराग पाने के लिए प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन; 2020. DOI: 10.6084/m9.figshare.12912386.v1।
11. नम्बूदरीपाद न, थॉमस अ. प्राचीन भारत के संदर्भ में शैक्षिक वास्तुकला का निर्माण. 2024;23:241-252. doi:10.37326/bthnlv22.8/1411।
12. आर डॉ. भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय: ज्ञान और शिक्षा के केंद्र. International Journal of History and Archaeology Research Studies; 2024, 25-30. DOI: 10.63090/IJHARS/3049.1622.0004।
13. कंबाला य, माथे र. भारतीय शिक्षा प्रणाली का पतन: मुस्लिम और औपनिवेशिक शासन का ऐतिहासिक विश्लेषण. Journal of Integral Sciences; 2023, 10. DOI: 10.37022/jis.v6i3.94।
14. चंद्रा म, तिवारी ग, मुखर्जी ए, मुखर्जी अ, दुबे अ, चंद्रात्रेय अ. प्राचीन ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के बीच सेतु: उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ; 2024. DOI: 10.5281/ZENODO.14265330।
15. जैन व. अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विनिमय: भारतीय इतिहास की

झलकियाँ. 2016;1:78-81।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.